INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

HPSC – HCS

HARYANA PUBLIC SERVICE COMMISSION

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

भाग – 1

हरियाणा का सामान्य ज्ञान (GK)

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**HPSC-HCS (Haryana Public Service Commission – Haryana Civil Service) (प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु)"** को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **हरियाणा लोक सेवा आयोग (HPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**HPSC-HCS"** भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें* **/**

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

WhatsApp करें - https://wa.link/wdvcfu

Online Order करें - https://bit.ly/40yVhHP

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	हरियाणा राज्य की उत्पत्ति • हरियाणा राज्य की अलग माँग • सच्चर फार्मूला • राज्य पुनर्गठन आयोग / फजल अली आयोग 1953 • जे.सी. शाह आयोग / सीमा आयोग	1
2.	हरियाणा की भौगोलिक स्थिति और विस्तार	3
3.	हरियाणा की स्थलाकृतियाँ	6
4.	हरियाणा की नदियां एवं झीलें • अपवाह तंत्र का वर्गीकरण • हरियाणा राज्य की प्रमुख झीलें	9
5.	हरियाणा की प्रमुख सिंचाई व्यवस्था एवं सिंचाई परियोजनाएँ • हरियाणा में सिंचाई व्यवस्था • राज्य की प्रमुख नहरें • प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ • अन्य प्रमुख सिंचाई योजनाएँ • हरियाणा के विभिन्न क्षेत्रों में सिंचाई के साधन • सरकार द्वारा जल प्रबंधन के लिए किए गए कार्य	12
6.	हरियाणा की जलवायु • सामान्य परिचय • जलवायु को प्रभावित करने वाले कारक • व्लादिमीर कोपेन का जलवायु वर्गीकरण • कोपेन के अनुसार हरियाणा के जलवायु प्रदेश • हरियाणा की प्रमुख ऋतुएँ • वर्षा का वितरण	14
7.	हरियाणा में मृदा (मिट्टी)संसाधन	17
8.	हरियाणा में वनस्पति	20
9.	हरियाणा में राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्य जीव अभ्यारण्य • हरियाणा के राष्ट्रीय उद्यान • हरियाणा के वन्यजीव अभ्यारण्य	23

	• हरियाणा के संरक्षण ग्रह (रिजर्व) • हरियाणा राज्य में प्रजनन केंद्र एवं संरक्षण	
	हरियाणा की अर्थव्यवस्था	
1.	हरियाणा की कृषि • हरियाणा की कृषि उत्पादन • हरियाणा की प्रमुख फसलें • कृषि से संबंधित राज्य सरकार की योजनाएँ • कृषि से संबंधित केंद्र सरकार की प्रमुख योजनाएँ	26
2.	हरियाणा में पशुपालन एवं डेयरी • हरियाणा में पशुपालन वाले प्रमुख जिले • प्रमुख पशु • पशुपालन विकास हेतु सरकार द्वारा किए गए अन्य प्रयास • सरकार द्वारा मछली पालन के लिए किए गए प्रयास • हरियाणा में सिंचाई व्यवस्था • राज्य की प्रमुख नहरें	32
3.	हरियाणा में खनिज एवं ऊर्जा संसाधन • गैर - परम्परागत ऊर्जा स्रोत • गोरखपुर हरियाणा परमाणु विद्युत परियोजना	37
4.	हरियाणा के प्रमुख औद्योगिक प्रदेश • खाद्य प्रसंस्करण आधारित उद्योग • प्रमुख औद्योगिक ईकाइयाँ	40
5.	राज्य की परिवहन एवं जनसंचार व्यवस्था • हरियाणा राज्य में परिवहन व्यवस्था • हरियाणा में जनसंचार व्यवस्था	44
6.	हरियाणा के प्रमुख पर्यटन स्थल • हरियाणा के प्रसिद्ध मन्दिर • हरियाणा की प्रमुख मस्जिदें • हरियाणा के प्रमुख मकबरे • हरियाणा की प्रमुख मजारें तथा दरगाह	50

	• हरियाणा के आधुनिक पर्यटन स्थल • हरियाणा के प्रमुख धार्मिक तीर्थ स्थल	
	हरियाणा का इतिहास	
1.	हरियाणा के इतिहास के स्त्रोत • प्राचीन हरियाणा के इतिहास के स्त्रोत • ऐतिहासिक ग्रंथ • अर्ध ऐतिहासिक ग्रंथ • मध्यकालीन हरियाणा के इतिहास के स्रोत ▪ हड़प्पा संस्कृति • वैदिक संस्कृति और (वैदिक काल) • वैदिक काल से संबंधित तथ्य • उत्तर वैदिक काल • महाभारत काल के बाद गणतंत्रीय व्यवस्था का उदय • मौर्य वंश • गुर्जर - प्रतिहार काल • हरियाणा और तोमर वंश • चौहान एवं तोमर शासकों के मध्य संघर्ष • राज्य के नगरों के प्राचीन नाम • हरियाणा के प्राचीन अवशेषों के प्राप्ति स्थान	56
2.	मध्यकालीन इतिहास के स्त्रोत • तुर्क आक्रमण और हरियाणा • महमूद गजनवी का आक्रमण एवं तोमर शासक जयपाल • मसूद एवं मादूद का आक्रमण • मुगल सम्राज्य (मुगलों के अधीन हरियाणा) • उत्तर मुगलकाल • मराठा तथा सिक्ख शक्तियों का प्रादुर्भाव • महादजी सिंधिया और हरियाणा • जॉर्ज थॉमस का हरियाणा शासन (1792-1802)	68
3.	आधुनिक इतिहास • ईस्ट इण्डिया कम्पनी का हरियाणा क्षेत्र में आगमन • ईस्ट इण्डिया कम्पनी का हरियाणा क्षेत्र में प्रशासन • कम्पनी द्वारा हरियाणा क्षेत्र में प्रशासनिक परिवर्तन	77

	• ईस्ट इण्डिया कंपनी के विरुद्ध • 1857 की क्रांति में हरियाणा का योगदान • 1857 की क्रांति में रियासतों की भूमिका • 1857 ई. की क्रांति के बाद हरियाणा की देशी रियासतें • राष्ट्रीय आंदोलन (1885 - 1919) • प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध में हरियाणा • प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी	
	हरियाणा की कला, संस्कृति और साहित्य	
1.	हरियाणा की प्रमुख भाषा एवं साहित्य	88
2.	हरियाणा में प्रमुख पुरातत्विक स्थल एवं संग्रहालय • हरियाणा के पुरातत्विक किले • हरियाणा के अन्य पुरातात्विक स्थल • हरियाणा के विभिन्न संग्रहालयों का विवरण	98
3.	वस्तुकला, मूर्तिकला एवं चित्रकला	101
4.	हरियाणा में प्रमुख लोक- संगीत एवं लोक-नृत्य	104
5.	प्रमुख लोक - वाद्य यंत्र • हरियाणा राज्य की संगीत कला • हरियाणा के गायक	106
6.	लोक नाट्य कला : स्वांग • हरियाणा के प्रमुख साँगी	108
7.	हरियाणा के प्रमुख मेले , त्योहार, उत्सव एवं पर्व	109
8.	वेशभूषा, आभूषण, रीति – रिवाज तथा लोकोक्तियाँ वेशभूषा • स्त्रियों की वेशभूषा • पुरुषों की वेशभूषा • बच्चों की वेशभूषा • प्रमुख रीति – रिवाज	116
	हरियाणा की राजव्यवस्था	
1.	प्रशासनिक ढाँचा • हरियाणा की प्रशासनिक संरचना • हरियाणा की विभिन्न विधानसभाए	119

	• हरियाणा के विधानसभा अध्यक्षों की सूची • पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीशों की सूची • हरियाणा के अन्य न्यायिक संस्थान • हरियाणा की महत्वपूर्ण संस्था एवं आयोग • पंचायती राज व्यवस्था • नगरीय स्वशासन से सम्बन्धित नया संशोधन	
2.	हरियाणा : विविध	13।

हरियाणा का भूगोल

अध्याय – 1

हरियाणा राज्य की उत्पत्ति

शब्द की उत्पत्ति :- हरियाणा शब्द मूलतः हरयाणा से बना है, जिसका अर्थ है 'हरि आयन' अर्थात् परमात्मा का वास स्थान। कुछ विद्वानों ने हरियाणा शब्द का संबंध हरि अर्थात् भगवान इंद्र और राजा हरिश्चन्द्र से जोड़ा है।

- कुछ विद्वानों के अनुसार हरियाणा शब्द की उत्पत्ति ऐसे हुई की प्राचीनकाल में यह क्षेत्र जंगलों से घिरा था तथा यहाँ चोर - डाकू लोग गुजरने वाले लोगों का सामान हर लेते थे, इसी हरना से हरियाणा शब्द बना है।
- प्राणनाथ चोपड़ा के अनुसार हरियाणा का नाम, अभिरयाणा - अहिरयाणा से मिला। हरियाणा को ऋग्वेद में रज हरियाणे कहा गया है।
- कुछ विद्वान मानते हैं कि प्राचीन काल में इस प्रदेश को हरिधान्यक कहा जाता था, जो आते - आते हरियाणा बन गया। धरणीधर ने अपनी रचना अखंड प्रकाश में लिखा है कि यह शब्द 'हरिबंका 'से लिया गया है।

- 1756-57 से पहले हरियाणा क्षेत्र मुगलों के अधीन था ।
- 1756–57 में हरियाणा पर पूर्ण रूप से मराठों ने अधिकार कर लिया था ।
- द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803)– जनरल लेक के ऊपर उत्तरी भारत में अंग्रेजी साम्राज्य विस्तार की जिम्मेदारी थी । इसी निति के तहत् जनरल लेक ने उत्तर भारत में अलीगढ़, दिल्ली, भरतपुर व आगरा के लासवाडी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया
- मराठा सरदार दौलत राव सिंधियाँ और जनरल लेक के मध्य लासवाडी आगरा में युद्ध हुआ , जिसमें मराठाओं की पराजय हुई । इस युद्ध के पश्चात मराठाओं ने अंग्रेजों के साथ सुर्जीअंजन गाँव की संधि की ।
- सुर्जीअंजन गाँव की संधि (30 दिसम्बर 1803) के तहत् अंग्रेजों ने हरियाणा क्षेत्र मराठाओं से छीनकर अंग्रेजी साम्राज्य में शामिल कर दिया । अर्थात् 30 दिसम्बर 1803 को हरियाणा क्षेत्र अंग्रेजों के अधीन हो गया ।
- सन् 1809 – 10 में अंग्रेजों ने हरियाणा पर पूर्ण रूप से अधिकार कर लिया ।
- 1819 में अंग्रेजों ने हरियाणा का विभाजन तीन क्षेत्रों में कर दिया ।
  1. **उत्तरी क्षेत्र –** पानीपत, सोनीपत, हाँसी, हिसार, रोहतकऽ
  2. **केन्द्रीय क्षेत्र –** दिल्ली
  3. **दक्षिणी क्षेत्र –** गुरुग्राम, रेवाड़ी, नूँह, हथीन, होडल, सोहना ।
- 1833 – 34 में ईस्ट इंडिया कंपनी "उत्तरी-पश्चिमी प्रांत" का गठन किया । आगरा को इस उत्तरी-पश्चिमी प्रांत की राजधानी बनाया गया । इस उत्तरी पश्चिमी प्रांत को छः डिविजनों में बाँटा गया था। जिनमें से एक दिल्ली डिविजन था । दिल्ली डिविजन के अंतर्गत पाँच जिले – पानीपत, रोहतक, हिसार , गुरुग्राम व दिल्ली शामिल थे ।
- 1857 की क्रांति के समय हरियाणावासियों ने क्रांतिकारियों का साथ दिया जिसके कारण 1858 के अधिनियम के तहत् 1858 में हरियाणा का पंजाब विलय कर दिया गया ।
- 1892 -93 में पंजाब एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट पेश की गई । इस रिपोर्ट में कथन पेश किया गया कि –"वस्तुतः हरियाणा और पंजाबवासियों में प्रत्येक क्षेत्र में अनेक भिन्नताएँ हैं" ।

हरियाणा राज्य की अलग माँग :-

- सर्वप्रथम 1923 ई. में स्वामी सत्यानंद ने लाहौर से माँग उठाई की हरियाणा को पंजाब से अलग कर अलग राज्य के रूप में स्थापित किया जाये ।
- दूसरी बार 1925 में हरियाणा पीरजादा मोहम्मद हुसैन ने अखिल भारतीय मुस्लिम लीग के दिल्ली अधिवेशन में माँग उठाई की हरियाणा को पंजाब से अलग करके दिल्ली में शामिल किया जाये ।
- 1928 ई. में सर्वदलीय सम्मेलन दिल्ली का आयोजन किया गया जिसमें हरियाणा को दिल्ली में शामिल करने को कहा गया ।
- 1929 ई. में पेश की गई नेहरु रिपोर्ट में भी मोतीलाल नेहरु ने पंजाब से अलग कर हरियाणा को अलग राज्य के रूप में स्थापित करने की बात कही गई ।
- 1932 ई. में दीनबन्धु गुप्त ने अलग से हरियाणा की माँग उठाई तथा इसका समर्थन, महात्मा गाँधी , मोहम्मद अली जिन्ना , चौधरी छोटुराम व अरुणा आसफ अली ने किया ।
- 1946 ई. में कांग्रेस ने तात्कालिक अध्यक्ष पट्टाभि सीतारमैया ने भी पंजाब से अलग कर हरियाणा की माँग उठाई ।
- 1949 ई. में भारत स्वतंत्रता के पश्चात पंजाब के पहले मुख्यमंत्री गोपीनाथ भार्गव को बनाया गया ।
- 1948 ई. में मास्टर तारा सिंह ने "अजीत" नामक पत्र के माध्यम से सिक्ख राज्य की माँग उठाई ।

सच्चर फार्मूला :-

- 1949 ई. में पंजाब के दूसरे मुख्यमंत्री भीमसेन सच्चर बने इन्होंने सच्चर फार्मूला लागू किया (1 अक्टूबर 1949) जिसके तहत् पंजाब का विभाजन हिन्दी क्षेत्र और पंजाबी क्षेत्र के रूप में दो भागों में किया गया ।

सच्चर फार्मूला
1 अक्टूबर 1949

हिन्दी क्षेत्र	**हिन्दी क्षेत्र**
हिसार, रोहतक, गुरुग्राम, करनाल, जगाधरी, नारायणगढ़, कांगड़ा	**शेष पंजाब का हिस्सा व घग्घर का हिस्सा व घग्घर के दक्षिणी हिस्से**

सच्चर फार्मूले को जनता ने नकार दिया

राज्य पुनर्गठन आयोग / फजल अली आयोग 1953 :-

- राज्य के पुनर्गठन के लिए 1953 ई. में फजल अली की अध्यक्षता में राज्य पुनर्गठन आयोग का गठन किया जिसमें 3 सदस्य थे।

1. फजल अली अध्यक्ष
2. एच.एन. कुंजरू
3. एच.एम. पणिकर

फजल की अध्यक्षता में गठित होने के कारण इसे **फजल अली आयोग** भी कहा जाता है।

- राज्य पुनर्गठन अधिनियम रिपोर्ट 1956 – इसमें कहा गया था कि "अलग राज्य के गठन से भाषा संबंधित विवाद , समाप्त नहीं होगा और दोनों भाषाओं का "अहित होगा " इस कारण इस अधिनियम में हरियाणा की अलग माँग को अस्वीकार कर दिया।

क्षेत्रीय फार्मूला (24 जुलाई 1956)

पंजाब सरकार की सिफारिशों पर तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने इस फार्मूले को 24 जुलाई 1956 को लागू किया। इसके अंतर्गत निम्न प्रावधान किये गये।

1. इसके अंतर्गत पंजाब का विभाजन कर दो भागों में विभाजित किया –

   हिन्दी क्षेत्र – गुरुग्राम, रोहतक, हिसार, करनाल, महेन्द्रगढ़ नखाणा व जींद तहसील, नारायणगढ़, जगाधरी, शिमला, कांगडा क्षेत्र इसके अंतर्गत शामिल किये गये।

   पंजाबी क्षेत्र – इसमें शेष पंजाब के हिस्से को शामिल किया गया।

2. क्षेत्रीय फार्मूला के तहत् पंजाब को द्विभाषी राज्य घोषित कर दिया।
3. इसके तहत् दोनों राज्यों की विधानसभा व गवर्नर एक ही होंगे।
4. दोनों क्षेत्रों के अल्पसंख्यकों को सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान की जायेगी।
5. सभी स्थानीय भाषाओं की उन्नति के लिए सहयोग का आश्वासन दिया गया।

- 1956 में प्रताप सिंह कैरों पंजाब के मुख्यमंत्री बन जाते हैं और 1957 में इन्होंने हरियाणा में पंजाबी को अनिवार्य रूप से लागू का दिया पंजाबी के अनिवार्य रूप से लागू होने का विरोध जनसंघ पार्टी और आर्य समाज ने किया।
- तथा क्षेत्रीय फार्मूले को भी खत्म कर दिया गया।

NOTE :-

1. फजल अली की अध्यक्षता में 1955 में हरियाणा में पहली बार सीमा आयोग का आगमन हुआ। सीमा आयोग पहली बार 1955 में रोहतक में आया था।
2. 1957 में हरियाणा में "हिन्दी सत्याग्रह आंदोलन" की शुरुआत हुई। इस आंदोलन का सर्वाधिक प्रभाव रोहतक व हिसार में रहा।
3. 1957 में क्षेत्रीय फार्मूले को खारिज करने के पश्चात हरियाणा में हिन्दी क्षेत्रीय समिति गठित की गई।

- हिन्दी क्षेत्रीय समिति का अध्यक्ष बलवंत राय तायल को बनाया गया।
- क्षेत्रीय फार्मूला रद्द होने के पश्चात 1960 में तारासिंह ने हरियाणा की अलग माँग के लिए आंदोलन शुरू किया। तब पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों ने तारासिंह को गिरफ्तार करवा कर जेल में डाल दिया।
- तारासिंह के जेल जाने के पश्चात इस आंदोलन का नेतृत्व फतेहसिंह (जनता दल के अध्यक्ष) ने किया।
- 1962 में भारत –चाइना युद्ध के कारण आंदोलन को स्थगित करना पड़ा।
- 1964 में प्रतापसिंह कैरों व नेहरु जी की मृत्यु हो गई।
- 1964 में इनकी मृत्यु के बाद फतेहसिंह ने दोबारा आंदोलन शुरू किया।
- 23 सितम्बर 1965 को भारत के गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा ने संसदीय समिति बनाने की घोषणा की।
- "संसदीय समिति" का गठन सरदार हुक्कम सिंह की अध्यक्षता में किया गया।
- 3 मार्च 1966 को देवीलाल ने "हरियाणा संघर्ष समिति" के द्वारा हरियाणा का जल्द से जल्द गठन करने की माँग की।

जे.सी. शाह आयोग / सीमा आयोग :-

हुक्कम सिंह की सिफारिशों पर 23 अप्रेल 1966 को जे.सी शाह की अध्यक्षता में सीमा आयोग का गठन किया गया। इसमें 3 सदस्य शामिल थे।

1. जे.सी शाह (अध्यक्ष)
2. एस के दत्त
3. एम एम फिलिप

NOTE :- एस के दत्त की सिफारिश पर ही खरड तहसील को पंजाब में शामिल किया गया।

- 31 मई 1966 को शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट पेश की।
- सीमा आयोग की सिफारिशों पर "पंजाब पुनर्गठन अधिनियम" के तहत् 1 नवम्बर 1966 को हरियाणा राज्य का गठन किया गया।

महत्वपूर्ण तथ्य

1. हरियाणा राज्य का गठन 1 नवम्बर 1966 को हुआ।
2. हरियाणा गठन के समय इसमें 7 जिले थे। इनमें से सबसे बड़ा जिला हिसार था। सबसे छोटा जिला जींद था।
3. हरियाणा गठन के समय भारत की प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी थी।
4. हरियाणा गठन के समय भारत के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन थे।
5. हरियाणा के पहले मुख्यमंत्री भगवत दयाल शर्मा (बेरी झज्जर) को बनाया गया। भगवत दयाल शर्मा मध्यप्रदेश व उड़ीसा के राज्यपाल भी रहे हैं।
6. हरियाणा का पहला राज्यपाल श्री धर्मवीर को बनाया गया।

सारांश

- 1756 -57 में हरियाणा मराठों के अधीन था।
- 1803 में हरियाणा अंग्रजों के अधीन हुआ।
- 1809 -10 में हरियाणा पूर्ण रूप से अंग्रेजों के अधीन हुआ।
- 1819 में हरियाणा का विभाजन तीन भागों में किया गया।
- 1833 -34 में इसे उत्तरी -पश्चिमी प्रांत में मिलाया गया था।
- 1858 में हरियाणा को पंजाब में मिला दिया गया।
- 1892 – 93 में पंजाब एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट पेश की गई।
- 1923 में सर्वप्रथम स्वामी सत्यानंद ने अलग हरियाणा की माँग उठाई।
- 1948 में तारासिंह ने अलग सिक्ख राज्य की माँग उठाई।
- 1 अक्टूबर 1949 को सच्चर फार्मूला लागू हुआ।
- 1953 में फजल अली आयोग (राज्य पुनर्गठन आयोग) का गठन हुआ।
- 24 जुलाई 1956 में क्षेत्रीय फार्मूला लागू हुआ।
- 23 सितम्बर 1956 को संसदीय समिति बनाने की घोषणा की गई।
- 23 अप्रेल 1966 को जे.सी शाह आयोग (सीमा आयोग) का गठन हुआ।
- 31 मई 1966 को शाह आयोग ने अपनी रिपोर्ट पेश की।
- 1 नवम्बर 1966 को हरियाणा राज्य का गठन किया गया।

अध्याय – 2

हरियाणा की भौगोलिक स्थिति और विस्तार

हरियाणा उत्तर भारत में स्थित एक राज्य है। इसके उत्तर - पूर्वी भाग में शिवालिक की पहाड़ियाँ तथा दक्षिण में अरावली पहाडियाँ तथा मध्य में बड़े समतल मैदान हैं, जो भौगोलिक विविधता को प्रकट करते हैं।

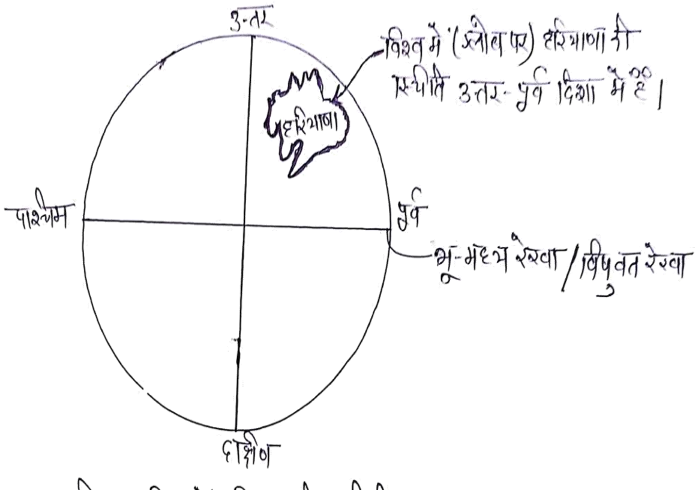

चित्र – विश्व में हरियाणा की स्थीति

चित्र – भारत में हरियाणा की स्थीति

- *राज्य की सीमा से 5 राज्य तथा 2 केंद्रशासित प्रदेश लगे हैं।*
- *उत्तर पूर्व में हिमाचल*
- *दक्षिण - पश्चिम में राजस्थान*
- *पूर्व में उत्तर प्रदेश उत्तराखण्ड और दिल्ली*
- *उत्तर पश्चिम में पंजाब और चंडीगढ़ है।*
- *दिल्ली और चंड़ीगढ़ 2 केन्द्र शासित प्रदेश हैं।*
- *हरियाणा की सीमा सबसे अधिक राजस्थान से लगी है (1262 km) और सबसे कम उत्तराखण्ड से लगी है (12km) उत्तर पूर्व में शिवालिक पर्वत, दक्षिण में अरावली की पहाड़ियाँ, राजस्थान का रेगिस्तान, पूर्व में यमुना नदी दक्षिण पश्चिम में राजस्थान का रेगिस्तान स्थित हैं।*

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

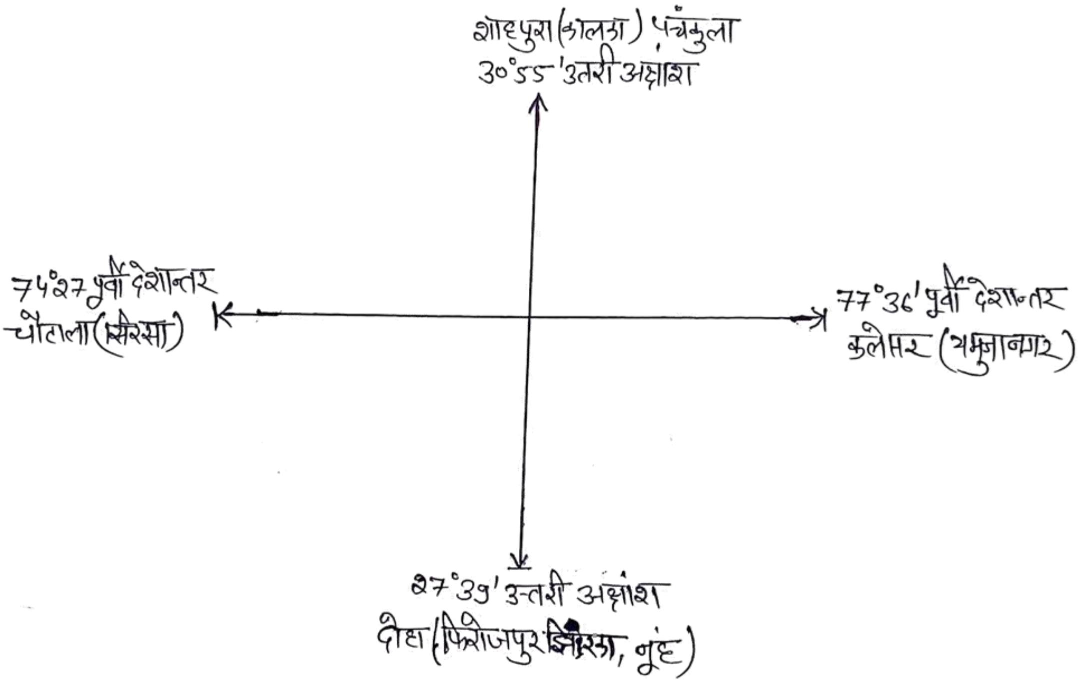

2. **पश्चिमी मण्डल** - पश्चिमी मण्डल में हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, महेंद्रगढ़, भिवानी रेवाड़ी के अतिरिक्त जींद, गुडगाँव, झज्जर रोहतक आदि के कुछ भाग शामिल हैं।

- दक्षिण पश्चिम भू - भाग सामान्यः शुष्क रहता है, जहाँ सामान्य वर्षा 400 mm से कम होती है।
- पश्चिम मण्डल में शामिल गुरुग्राम एवं महेंद्रगढ़ जिलों के भू - भाग प्रायः अर्द्ध शुष्क क्षेत्र में आते हैं, जहाँ 400 - 500 mm तक औसत वर्षा होती है।

महत्वपूर्ण तथ्य :- भारत का पहला मौसम उपग्रह "मेटसेट" है जिसका 2003 में नाम परिवर्तन करके "कल्पना –I कर दिया ।

- हरियाणा में औसत वार्षिक वर्षा 30 से 110 सेमी. होती है।
- हरियाणा का सर्वाधिक वर्षा वाला जिला यमुनानगर है ।
- हरियाणा का न्युनतम वर्षा वाला जिला सिरसा है ।
- हरियाणा की चेरापूंजी छिछरोली (यमुनानगर) को कहते हैं ।
- हरियाणा में सर्वाधिक वर्षा "बंगाल की खाड़ी शाखा" से होती है ।
- हरियाणा में वर्षा दो ऋतुओं में होती है जो निम्न है – ग्रीष्म ऋतु में वर्षा , शीत ऋतु में वर्षा

1. **ग्रीष्म ऋतु में वर्षा :-**

- इस ऋतु में जुलाई से सितम्बर के मध्य वर्षा होती है ।
- इस ऋतु में लगभग 80% वर्षा होती है ।

2. **शीत ऋतु में वर्षा :-**

- इस ऋतु में दिसम्बर से फरवरी के मध्य वर्षा होती है ।
- इस ऋतु में लगभग 15-20 % वर्षा होती है । इस वर्षा को "मावठ" कहते हैं ।
- मावठ गेहूँ की फसल (रबी की फसल) के लिए उपयोगी है ।

अध्याय – 7

हरियाणा में मृदा (मिट्टी) संसाधन

- मृदा शब्द लैटिन भाषा के" सोलम "से उत्पन्न हुआ है । सोलम का अर्थ फर्श होता है । मृदा - भू -पटल के ऊपर पाये जाने वाले असंगठित कणों को मृदा कहते हैं जबकि संगठित कण चट्टान कहलाते है । मृदा निर्माण की प्रक्रिया "पेडोजिनेसिस "कहलाती है। मृदा का अध्ययन" पेडोलोजी " कहलाता है ।

हरियाणा में मृदा का वर्गीकरण

भौतिक व रासायनिक गुणधर्म के आधार पर	धरातलीय बनावट के आधार पर
1.अत्यंत हल्की मृदा	1.पहाड़ी क्षेत्रों की मृदा
2.हल्की मृदा	2.मैदानी क्षेत्र की मृदा
3.मध्यम मृदा	3.रेतीली मृदा
4.सामान्य भारी मृदा	
5.बहुत भारी मृदा	
6.गिरिपादीय मृदा	

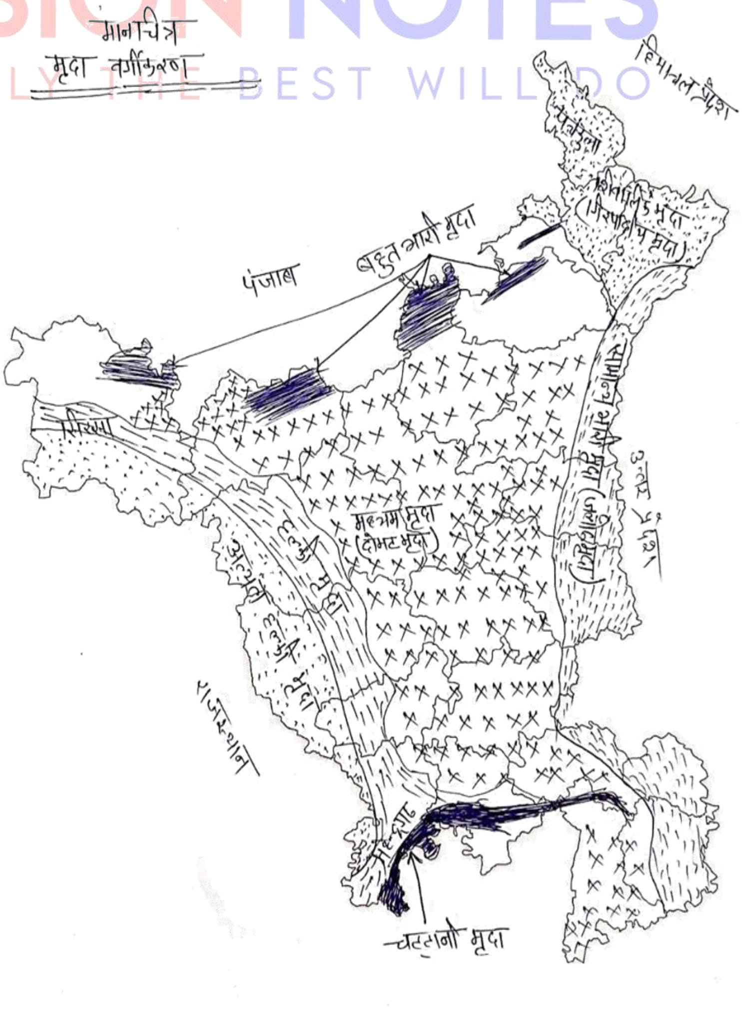

1. अत्यंत हल्की मिट्टी -

- यह मिट्टी बालू का प्रधान दोमट मिट्टी है। यह मिट्टी दक्षिण हरियाणा के जिलों में जैसे, हिसार, भिवानी, फतेहाबाद, महेंद्रगढ़ और सिरसा के दक्षिणी भाग में मिलती है।
- इस मिट्टी में जल ग्रहण करने की क्षमता कम होती है। और यह बहुत जल्दी सूख जाती है।
- इस मिट्टी में चूने के अंशों का बाहुल्य रखता है।
- इस मिट्टी में ऐसी फसलें बोई जाती हैं जिन्हें पानी की कम आवश्यकता होती है, जैसे - चना, बाजरा आदि।
- सरकार इन क्षेत्रों में उत्पादन क्षमता बढ़ाने के लिए बहुत से प्रयास कर रही है।

2. हल्की मिट्टी

- यह मिट्टी 2 प्रकार की मिट्टियों दोमट मिट्टी और बालू दोमट मिट्टी का ही प्रकार है।
- हल्की मिट्टी को रौंसली मिट्टी भी कहते हैं।
- इस मिट्टी में सिल्ट तथा मृतिका की अपेक्षा बालू अधिक मात्रा में होता है। इस मृदा में जल सोखने की क्षमता अधिक होती है। सिंचाई के माध्यम से इस मिट्टी को और अधिक उपजाऊ बनाया जा सकता है। इस मिट्टी में हल चलाना भी आसान होता है। यह मिट्टी नरम प्रवृति की होती है। यह मिट्टी हरियाणा राज्य के हिसार, भिवानी रेवाड़ी, गुरुग्राम तथा झज्जर जिले में मिलती है। यह शुष्क भूमि कृषि के लिए उपयोगी मानी जाती है।

3. मध्यम मिट्टियाँ - मध्यम मिट्टियों में मोटी दोमट, हल्की दोमट और सामान्य दोमट मिट्टियाँ सम्मिलित हैं। यह मृदा अन्य मृदाओं की अपेक्षा अधिक उपजाऊ होती है।

मोटी (भारी) दोमट मिट्टी - इस मिट्टी के कण मोटे होते हैं। यह मिट्टी मेवात (नूँह) जिले के मध्य क्षेत्र, पश्चिम फिरोजपुर और सिरसा के निचले क्षेत्रों में पाई जाती है।

हल्की दोमट मिट्टी - यह मिट्टी मुख्यतः गुरुग्राम के उत्तरी भाग में, दक्षिणी - पश्चिमी अम्बाला तथा नूँह जिले के उत्तरी पश्चिम भाग में पाई जाती है।

सामान्य दोमट मिट्टी - यह मिट्टी हरियाणा के मध्य - वर्ती भाग में मुख्यतः सोनीपत, पानीपत, कुरुक्षेत्र, करनाल, जींद, कैथल, गुरुग्राम, फरीदाबाद जिलों में पाई जाती है।

- यह मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ होती है। जिसमें गेंहू, ज्वार, गन्ने, कपास का उत्पादन किया जाता है।

4. सामान्य भारी मिट्टी - इस मिट्टी को खादर मिट्टी भी कहते हैं

- यह मिट्टी सिल्ट युक्त होती है। यह कम जल को सोखती है तथा जल सोखने पर कठोर हो जाती है।
- यह मिट्टी मुख्यतः यमुना नदी के साथ वाले जिलों में जैसे यमुनानगर,कुरुक्षेत्र, पानीपत, सोनीपत और फरीदाबाद के पूर्वी क्षेत्र में पाई जाती है। ऊँचे भागों पर इस मिट्टी को बांगर मिट्टी कहा जाता है।

5. भारी मिट्टी -

- इस मिट्टी को 'डाकर' भी कहा जाता है।
- इस मिट्टी में चीका युक्त सिल्ट की प्रधानता होती है। यह मिट्टी बारिश ऋतु में चिपचिपी तथा शुष्क मौसम में कठोर हो जाती है।
- यह मिट्टी मुख्यतः थानेसर, फतेहाबाद और जगाधरी के क्षेत्रों में पाई जाती है।
- इस मिट्टी की उर्वरकता को जैविक और रासायनिक खादों द्वारा बढ़ाया जा सकता है। इसमें चना, जों, गेहूँ और चावल की फसल अच्छी होती है।

6. शिवालिक गिरिपादीय अथवा चट्टानी तल की मिट्टियाँ

शिवालिक गिरिपादीय मिट्टी में चीका, बालू, बजरी तथा अन्य तत्वों की मात्रा अधिक होती है।

- इस मिट्टी को स्थानीय तौर पर - घाहर या कंड़ी मिट्टी के नाम से भी जाना जाता है।
- यह मिट्टी पंचकुला की कालका, अम्बाला की नारायणगढ़ और यमुनानगर की जगाधारी क्षेत्रों में पाई जाती है।
- हरियाणा के दक्षिणी भाग में अरावली पर्वतमाला की पहाड़ियों के कारण पथरीली और रेतीली, चट्टानी तल की मिट्टी पाई जाती है। यही निम्न कोटी की मिट्टी समझी जाती है। यह कम उपजाऊ मिट्टी होती है।

<u>धरातलीय बनावट के आधार पर -</u>

- हरियाणा प्रदेश का अधिकतर भाग मैदानी है तथा कृषि की उपज मुख्यतः सिंचाई पर निर्भर है। राज्य में पहाड़ी क्षेत्र सीमित हैं और मैदानों की मिट्टी नदियों द्वारा बहाकर लाई गई कछारी किस्म की है। धरातलीय बनावट के आधार पर हरियाणा की भूमि को निम्नलिखित 3 भागों में बाँटा गया है -

1. पहाड़ी क्षेत्र की मृदा
2. मैदानी क्षेत्र की मृदा
3. रेतीली मिट्टी का क्षेत्र

1. पहाड़ी क्षेत्र की पथरीली मिट्टी -

- उत्तर हरियाणा में इस प्रकार की मिट्टी मोरनी की पहाड़ियों पर पाई जाती है।
- दक्षिणी भाग में अरावली की पहाड़ियों में - पथरीली और रेतीली मिट्टियाँ पाई जाती हैं।
- इस प्रकार की मिट्टी को हर क्षेत्र में अलग नाम से जाना जाता है। यमुनानगर में इसे कंडी मिट्टी के नाम से जाना जाता है।

अध्याय – 6

हरियाणा के प्रमुख पर्यटन स्थल

हरियाणा के प्रसिद्ध मन्दिर -

1. पंचकुला जिले के मन्दिर (चंड़ीगढ़) -

मनसा देवी मन्दिर - यह मन्दिर पंचकुला में स्थित है इस मन्दिर का निर्माण मनीमाजरा शासक गोपाल सिंह जी ने सन 1815 में करवाया था। बाद में सन 1991 में मनसा देवी साइन एक्ट कि स्थापना की गई।

भीमा देवी मन्दिर - यह भी हरियाणा के पंचकुला जिले में स्थित है। इस मन्दिर को खजूराहो मन्दिर की भी संज्ञा दी जाती है।

2. गुरुग्राम जिले के मन्दिर -

शीतला माता मन्दिर - इस मन्दिर का निर्माण राजा भरतपुर द्वारा गुरु द्रोणाचार्य की पत्नी माता शीतला देवी के मन्दिर के रूप में करवाया गया। सन 1991 में हरियाणा सरकार द्वारा शीतला माता बार्ड का गठन किया गया। इस मन्दिर में शीतला माता की सवा किलो सोने की मूर्ति स्थापित की गई है। यहाँ चैत्र मास के नवरात्रों, बैसाख, अषाढ़, और अश्विन के नवरात्रों में मेले का आयोजन होता है।

प्राचीन शिव मन्दिर - गुरुग्राम के सोहना में एक प्राचीन शिव मन्दिर है जो हिन्दुओं का मंदिर है। जो कि भगवान शिव को समर्पित है। यह मन्दिर शिव कुण्ड के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि यह मन्दिर 500 साल पुराना है। इस मन्दिर के कुण्ड में स्नान करने से त्वचा के रोग ठीक हो जाते हैं। इस मन्दिर में भगवान शिव लिंग सुबह के समय एक बच्चे की तरह दिन में एक जवान की तरह और शाम को जैसे बूढ़ा आदमी ध्यान मुद्रा में बैठा हो ऐसा लगता है। यहाँ शिवरात्री के दिन मेले का आयोजन होता है।

3. कुरुक्षेत्र जिले के मन्दिर -

1. **स्थानेश्वर महादेव मन्दिर** - यह मन्दिर थानेसर नामक स्थान पर है। इस मन्दिर का उल्लेख पुराणों के केदारखंड में भी मिलता है। ऐसा माना जाता है कि भगवान शिव लिंग के रूप में पहली पूजा यहीं कि गई थी। महमूद गजनवी ने आक्रमण के दौरान इस मन्दिर को क्षतिग्रस्त कर दिया था। इसे फिर से मराठा साम्राज्य के सदाशिव राव के द्वारा ठीक कराया गया।
2. **सर्वेश्वर महादेव मन्दिर** - यह महादेव मन्दिर ब्रह्म सरोवर में स्थित है। इस मन्दिर को एक धनुषाकार पुल के माध्यम से धरती से जोड़ा गया है। शुरुआत में यह मन्दिर भगवान शिव को समर्पित था लेकिन अब इसमें भगवान हनुमान व भगवान गरुड़ जी किया प्रतिमा भी इस मन्दिर में शोभायान है।
3. **बिरला मन्दिर** - यह थानेसर में स्थित है इसको राज्य का सबसे बडा मन्दिर होने का गौरव प्राप्त है। इस मन्दिर का निर्माण श्री जुगल किशोर बिरला ने सन 1955 में करवाया था। यह संगमरमर का एक विशाल मन्दिर है। इस मन्दिर की दीवारों पर श्रीमद् भगवत गीता के सभी 18 अध्यायों को बड़े ही सुन्दर ढंग से अंकित किया गया है।
4. **देवीकूप भद्रकाली मन्दिर** - यह कुरुक्षेत्र में स्थित मन्दिर है जो माता को 52 शक्तिपीठों में से एक है। ऐसा माना जाता है कि इस स्थान पर माता सती का दायाँ पैर (घुटने के नीचे का भाग) गिरा था। इस मन्दिर में साल में 2 बार आने वाले नवरात्री बड़े ही धूम - धाम से मनाए जाते हैं।
5. **अदिति मन्दिर** - कुरुक्षेत्र के अमीन नामक गाँव में यह ऐतिहासिक और प्राचीन मन्दिर स्थित है। इसी स्थान पर अदिति ने सूर्य को जन्म देने से पूर्व तपस्या की थी इसी कारण इसका नाम अदिति मन्दिर रखा गया था।

4. महेंद्रगढ़ के प्रमुख मन्दिर -

1. **शिव मन्दिर** - महेंद्रगढ़ से दूर कनीना - दादरी मार्ग पर स्थित गाँव बाघोत का प्राचीन शिव मन्दिर चिरकाल से उत्तरी भारत में लाखों नर - नारियों की श्रद्धा का केंद्र बना हुआ है। यहाँ शिवरात्री का मेला धूमधाम से मनाया जाता है। मान्यताओं के अनुसार प्राचीनकाल में यह मन्दिर भागवत कथा का प्रमुख केंद्र था। इसलिए इसका नाम बाघोत पड़ा।
2. **मोडवाला मन्दिर** - नारनौल का यह मन्दिर भगवान शिव को समर्पित है। मान्यताओं के अनुसार इस स्थान पर शिवलिंग भूमि से प्रकट हुआ था।
3. **चामुण्डा देवी मन्दिर** - यह नारनौल में स्थित एक प्राचीन मन्दिर है। यह मन्दिर चौरासी स्तंभों का है लेकिन अभी कुछ ही स्तम्भ बाहर दिखाई देते हैं। इन स्तंभों पर अशोककालीन चिन्ह स्पष्ट दिखाई देते हैं। राव - नवमी के दिन बड़ा मेला लगता है।

5. कैथल के प्रमुख मन्दिर

1. **राधेश्याम मन्दिर** - कैथल के पुण्डरीक कस्बे में यह मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर में राधे - श्याम की विशाल प्रतिमा है। यहाँ जन्माष्टमी के दिन मेला लगता है।
2. **गीता मन्दिर** - यह भी कैथल का विशाल मन्दिर है। यहाँ पर भगवती देवी और गौरीशंकर की मूर्ति है। मन्दिर के साथ एक विशाल वटवृक्ष है। कहा जाता है कि यह वटवृक्ष पांडवों के समय से है।
3. **शिव मन्दिर** - यह पुण्डरीक तीर्थ में स्थित प्राचीन मन्दिर है। पहले इस मन्दिर पर मुसलमानों का अधिकार था। इस मन्दिर में शिवजी की विशाल मूर्ति है, जो आज भी लोगों के आकर्षण का केंद्र है।

4. **प्राचीन हनुमान मन्दिर** - कैथल में स्थित यह मन्दिर 500 वर्ष पुराना है। इस मन्दिर के पीछे एक मस्जिद भी स्थित है। यह मन्दिर लगभग एक मंजिल की ऊँचाई पर स्थित है।
5. **वृद्ध के दारेश्वर मन्दिर** - कैथल में स्थित इस मन्दिर के सरोवर में स्नान करने से केदारनाथ यात्रा के बराबर पुण्य मिलता है। यहाँ एक शिवालय भी है। जिसका निर्माण राजा उदयचंद्र ने करवाया था।
6. **फरीदाबाद के मन्दिर -**

दाऊजी का मन्दिर - फरीदाबाद में जीटी रोड़ पर स्थित वंचारी गाँव में दाऊ जी का मन्दिर है

यह श्री कृष्ण के भाई बलराम की याद में बना प्राचीन मन्दिर है। यहाँ से ब्रज क्षेत्र का आरम्भ होता है। यह उनकी कार्यस्थली थी।

पंचवटी मन्दिर - यह मन्दिर फरीदाबाद के पलरव में स्थित है। यह मन्दिर पांडवों से संबंधित है। अज्ञात वास के समय पांडवों ने यहीं पर कुछ समय व्यतीत किया था।इस मन्दिर में द्रोपती के नाम से एक तालाब और पाँच वट वृक्ष भी हैं।

7. **यमुनानगर के प्रमुख मन्दिर**

1. **चिट्टा मन्दिर** - यह मन्दिर यमुनानगर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में से है। यह यमुनानगर नगर के भाटिया नगर में स्थित है। इस चिट्टे हलुमान मन्दिर का इतिहास बहुत पुराना है। यहाँ पर हलुमान जी की सफेद रंग की मूर्ति स्थापित है। जिसका निर्माण 60 वर्ष पहले हुआ। ऐसा माना जाता है कि युद्ध में जाते हुए पांडवों को इस स्थान पर हलुमान जी ने दर्शन दिए थे। इस मन्दिर में सप्ताह के प्रत्येक मंगलवार को मेला लगाता है।
2. **सूर्यनारायण मन्दिर** - यह मन्दिर यमुनानगर के अमादपुर में स्थित है इस मन्दिर पर सूर्य की पहली किरण पड़ती है। इस मन्दिर को 1983 में स्वामी अखिलानंद ने बनवाया था।
3. **पंचकालीन जैन मन्दिर** - यह बूड़िया नामक स्थान पर स्थित है। यह 500 वर्ष पुराना पंचकाल का श्री दिगम्बर जैन मन्दिर है। जैन सम्प्रदाय का यह प्रमुख मन्दिर है।
4. **आदि बद्री नारायण मन्दिर** - यह मन्दिर यमुनानगर के काठगढ़ गाँव में स्थित है। यह स्थान पौराणिक महत्व रखने वाली, लुप्त हो चुकी सरस्वती नदी का उद्गम स्थल है। इस मन्दिर का निर्माण 1200 वर्ष पूर्व आदि गुरु शंकराचार्य ने करवाया था। यहाँ प्रत्येक वर्ष बैसाख की सातवीं तीज को मेला लगता है।

8. **रोहतक के प्रमुख मन्दिर** -

1. **शिव मन्दिर - किलोई** - किलोई गाँव का शिव मन्दिर रोहतक से 20 km दूर है। यह मन्दिर 300 वर्ष पुराना है। इस मन्दिर में लगभग 2000 साल पुराना शिवलिंग है। यह पुरातत्व विभाग के अनुसार दावा किया गया है। श्रावण व फाल्गुन मास में होने वाली शिवरात्री पर बहुत दूर से श्रद्धालु यहाँ आते हैं।

9. **जींद के प्रमुख मन्दिर** -

1. **जीतगिरी मन्दिर** - यह मन्दिर जींद जिले के काकदौड़ गांव में स्थित है। इस मन्दिर में बाबा जीतगिरी की समाधि पर प्रतिदिन ज्योति जलाई जाती है। यहाँ स्थित शिवलिंग के विषय में कहा जाता है कि यह ऐसे पाषाण से निर्मित है, जो हिमालय की नदियों के तीव्र वेग से नदियों के तल में लुढ़कता व घिसता रहा।
2. **भूतेश्वर मन्दिर जींद** - यह प्राचीन शिव मन्दिर है। यहाँ का शिवलिंग स्वयंभू माना जाता है। यह शिव मन्दिर जींद के चार तीर्थों जयंत तीर्थ, भूतेश्वर तीर्थ, सोमतीर्थ तथा ज्वालमालश्वर तीर्थों में से एक है। यह मन्दिर एक विशाल सरोवर के मध्य स्थित है। इस सरोवर को रानी के तालाब के नाम से जाना जाता है।

राज्य के अन्य मन्दिर -

मन्दिर	**स्थान**
माता भीमेश्वरी मन्दिर	झज्जर (बेरी)
रोडमल मन्दिर	झज्जर (वेरी)
गरीबदास धाम	(छुडानी) झज्जर
प्राचीन ईंटों का मन्दिर	कैथल, (कलायत)
ग्यारह रुद्री शिव मन्दिर	कैथल
नवग्रह कुण्ड	कैथल
काली माता मन्दिर	कालका (चंडीगढ़)
माता समलोडा देवी (पिंजौर)	मोरनी हिल्स
माता बाबा संदुरी	करनाल
एकलव्य मन्दिर	खाँडसा (गुरुग्राम)
घंटेश्वर मन्दिर	रेवाड़ी
बाबा मस्त नाथ मन्दिर	रोहतक
देवी तालाब शिव मंदिर	पानीपत
विष्णु मन्दिर	भिवानी (तोशाम)
मोटी माता शिव मंदिर	भिवानी (धनाना)
गुरु गोरखनाथ मन्दिर	सोनीपत (गोरड़)
दादी सती मंदिर	सिरसा (कुम्हारिया)
इमलोटा मंदिर	चरखी- दादरी
कुतानी का ठाकुरद्वारा	झज्जर
डीघल गाँव का शिवालय	झज्जर

- **मिहिर भोज** - रामभद्र के बाद में मिहिरभोज ने गुर्जर प्रतिहार राज्य की बागडोर संभाली। उसने सिक्कों पर अपनी उपाधि 'आदिविराह' उत्कीर्ण करवाई यह प्रतिहार वंश का सबसे महान शासक को माना जाता है। मिहिरभोज के शासनकाल में प्रतिहार साम्राज्य प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हुआ तथा वह पेहोवा एक व्यापारिक केन्द्र के रूप में स्थापित हुआ। मिहिरभोज कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। मिहिर भोज ने 836 ई.- 885 ई. तक शासन किया ।885 ई. में निधन के बाद मिहिरभोज का पुत्र महेंद्रपाल शासक बना, परन्तु वह पिता की तरह योग्य सिद्ध नहीं हुआ।
- पेहोवा से प्राप्त अभिलेख से यह ज्ञात होता हैं कि महेंद्रपाल के शाशकों के दौरान हरियाणा का एक विस्तृत क्षेत्र उसकी अधिपत्य से बाहर निकाल चुका था। इससे यह भी ज्ञात होता हैं कि जौल (जाऊल) नामक एक तोमर सरदार ने अपनी शक्ति बढ़ा ली थी। जौल ज्येष्ठ पुत्र वज्रट भी अपने पिता कि तरह वीर और पराक्रमी था।
- उसके नेतृत्व में हरियाणा में शान्ति व्यवस्था कायम रही। वज्रट का पुत्र जज्जुक भी एक योग्य सरदार था। वह परिस्थितियों का समझ्ता था।
- 910 ई. में महेंद्रपाल के निधन के बाद राजनैतिक अस्थिरता का माहौल उत्पन्न हो गया, इसी परिस्थिति का लाभ उठाते हुए, जज्जुक के तीनों पुत्र गोगा, पूर्णराज्य एवं देवराज ने हरियाणा के सजीपवर्ती क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित कर स्वतंत्र रूप से तोमर शासन कि नींव रखी। राजेश्वर प्रतिहार शासक महेंद्रपाल के दरबार में रहते थे।

➢ **हरियाणा और तोमर वंश**

- पूर्व मध्यकाल के इतिहास में तोमारों का महत्वपूर्ण स्थान हैं।
- 17 वीं सदी के कवि के अनुसार राजपूतों के केवल 3 कुल ही महत्वपूर्ण रह गए थे ।
- चौहान, तोमर और पंवार ।
- शेष सभी कुल के समान माने गए थे।
- तोमरों कि उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है कोई इन्हें विदेशी आक्रमणकारीयो कीसंतान बताता है तो कोई आर्यों की।
- मुगलकालीन इतिहासकार खड़गराम के अनुसार तोमर वंश के शासक सोमवंशी क्षत्रिय थे। 1631 ई. के शीलालेख में तौमर को सोमवंशी क्षत्रिय एवं पांडवों का वंशज माना गया है।
- पेहोवा शीलालेखों से पता चलता है कि हरियाणा में तोमर वंश का उदय जौल (जाऊल) नामक सरदार के द्वारा हुआ। इसी शीलालेख से यह भी ज्ञात होता है कि जौल एक स्वतंत्र शासक नहीं था, वह तोमर शासक कि पाँचवी पीढ़ी से पैदा हुआ था। अनंगपाल ने ही तोमर राज्य की नीव रखी थी। जिसकी राजधानी ढ़ील्लिका (दिल्ली) थी।
- ऐतिहासिक स्त्रोतों से पता चलता है कि जौल प्रतिहारों की अधीनता स्वीकार कर अपनी मुद्राएँ चलवाई।
- जौल के बाद आपृच्छदेव तोमर वंश का शासक बना। जिसने तोमरों को बहुत समय पश्चात पूर्ण सत्ता प्रदान की।
- आपृच्छदेव के बाद उसका उत्तराधिकारी पीपलराज देव हुआ। पीपलदेव एक स्वतंत्र शासक था। पीपल राजा कि मुद्राएँ भी मिलती हैं जो उसके स्वतंत्र शासक होने का परिणाम प्रस्तुत करती हैं।
- पीपल राजदेव के पश्चात तीन अन्य राजाओं - रघुपाल, विल्हणपाल और गोपाल का उल्लेख मिलता है। इन राजाओं की कोई प्रचलित मुद्राएँ नहीं मिलती, जो यह सिद्ध करती हैं कि यह स्वतंत्र शासक नहीं थे।

➢ **चौहान एवं तोमर शासकों के मध्य संघर्ष**

- हर्षनाथ के शीलालेख से यह जानकारी मिलती है कि तोमरों की कमजोर स्थिति और राजनैतिक आस्थिरता के मध्य चौहान एवं तोमरों के मध्य संघर्ष हुए।
- इसी शीलालेख से पीपलराज देव और विल्हण पाल के साथ शाकम्भरी के चौहान शासकों के संघर्ष होने के साक्ष्य मिलते हैं, जिसमें तोमर शासकों की हार हो गई थी। तोमर शासक पीपल राज को उनके समकालीन चौहान शासक चन्दन पराजित किया था।
- पीपलराज के उत्तराधिकारी रघुपाल व विल्हण भी चौहान शासकों से पराजित हुए। विल्हणपाल के पुत्र गोपाल ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए चौहान शासक से सिंहपाल से युद्ध किया, परन्तु वह हार गया।
- गोपाल के बाद उत्तराधिकारी सुलक्षणपाल बना। सुलक्षणपाल ने अपने शासनकाल में नई मुद्रा प्रचलित करवाई।
- इससे सिद्ध होता है कि वह एक स्वतंत्र राजा था।
- सुलक्षणपाल के बाद उत्तराधिकारी बना।
- इस बीच भारत में तुर्कों का आक्रमण होना आरंभ हो गया। ऐसा माना जाता है कि तुर्क आक्रमण का संयुक्त रूप से सामना करने हेतु चौहान और तोमर शासकों में संधि कर ली।

● **राज्य के नगरों के प्राचीन नाम**

प्राचीन नाम	वर्तमान नाम
1. असन्धिवत	असन्ध
2. नरराष्ट्र	नारनौल
3. कलकूट	कालका

4. युगन्धर	जगाधरी
5. स्थाण्वीश्वर	थानेश्वर
6. कपिल स्थल	कैथल
7. पंचमपुर	पिंजौर
8. महेस्थ	महम
9. आशी	हाँसी
10. कंन्नोड	महेंद्रगढ़
11. सर्पदमन	सफीदो
12. गुरुग्राम	गुरुग्राम
13. प्रकृतनाक	नोरंगाबाद
14. शोणप्रस्थ	सोनीपत
15. पनप्रस्थ	पानीपत
16. पृथुदक	पेहोवा
17. अग्रोदका	अग्रोहा
18. रवावाडी	रेवाड़ी
19. अम्बाला	अम्बाला
20. शर्यणवत	कुरुक्षेत्र
21. रोहिताश	रोहतक
22. शैरीषकम	सिरसा
23. इकदार	फतेहबाद
24. जयन्तपुरी	जिन्द
25. अपलवा	पलवल
26. अब्दुल्लापुर	यमुनानगर
27. शरफाबाद	बहादुरगढ़
28. गवनमोहाना	गोहाना

- ***हरियाणा के प्राचीन अवशेषों के प्राप्ति स्थान***

अवशेष	स्थान
1. गुर्जर प्रतिहारकालीन अभिलेख	पेहोवा
2. बलीराम की मूर्ति	रोहतक
3. अग्रेय जनपद के सिक्के	अग्रोहा (हिसार)
4. मिट्टी की मुहरें	दौलतपुर
5. रामायण श्लोककांकित फलक	भिवानी
6. यक्ष की मूर्तियाँ	पलवल
7. जैन मूर्तियां	हाँसी
8. हर्षकालीन ताम्र मुद्राएं	सोनीपत
9. गुप्तकालीन मुद्राएं	रोहतक
10. कुणिन्दकालीन सिक्के	करनाल
11. टकसालें	अग्रोहा, बरवाल, औरंगाबाद
12. यौधेयकालीन साँचे	रोहतक (खोखराकोट)
13. सिक्के ढालने के साँचे	खोखराकोट, औरंगाबाद
14. सोने,तांबे के सिक्के	मिताथल (भिवानी)
15. इण्डो - ग्रीक सिक्के	खोखराकोट
16. कुषाणकालीन सोने व तांबे के सिक्के	मिताथल
17. हड़प्पा सभ्यता के अवशेष	भिवानी
18. मौर्यकालीन स्तूप व अवशेष	हिसार व फतेहाबाद

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

अध्याय – 2

मध्यकालीन इतिहास के स्त्रोत

❖ तुर्क आक्रमण और हरियाणा

- भारत के मध्यकालीन इतिहास का आरंभ भारत पर मुस्लिम आक्रमण के समय से माना जाता है। हरियाणा भारत के उत्तरी भाग में स्थित होने के कारण इन आक्रमणों से अधिक प्रभावित रहा।
- मुस्लिम आक्रमणकारियों में महमूद गजनवी प्रमुख था, जिसने अपने आक्रमण के दौरान हरियाणा प्रदेश का प्रयोग रास्ते के लिए किया था।

  अतः हरियाणा में इसके आक्रमण से हरियाणा के मध्यकालीन इतिहास के प्रारंभ को देखा जा सकता है।
- पाल वंश के शासक जयपाल के शासक बनने के साथ ही भारत के पश्चिमोत्तर भाग से तुर्क आक्रमण होने प्रारंभ हो गए। 10 वीं सदी के अंतिम चरण में बगदाद के खलीफा की शक्ति समाप्त होने के बाद उसके उत्तराधिकारी सुबुक्तगीन ने गजनी में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।
- गजनी के शासक सुबुक्तगीन 986 ई. में हिन्दू शाही वंश के शासक जयपाल को पराजित कर पेशावर तक अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। 997 ई. में सुबुक्तगीन के निधन के बाद उसका उत्तराधिकारी महमूद गजनबी बना।

महमूद गजनवी का आक्रमण एवं तोमर शासक जयपाल

- महमूद गजनवी जिसने 971 से 1030 AD तक शासन किया। भारत की धन - संपत्ति से आकर्षित होकर गजनवी ने भारत पर कई आक्रमण किए। उसके आक्रमण का मुख्य मकसद भारत की संपत्ति को लूटना था। उसने भारत पर 17 बार आक्रमण किए।
- गजनवी ने पहली बार 1000 AD में वर्तमान अफगानिस्तान और पाकिस्तान पर हमला किया। इसने हिन्दू शासक जयपाल को पराजित किया। जिसने बाद में आत्महत्या कर ली और उसका पुत्र आनंदपाल उसका उत्तराधिकारी बना।
- 1000 ई. में महमूद गजनवी ने थानेसर पर आक्रमण किया। महमूद गजनवी का भारत पर यह छठा आक्रमण था। इस समय हरियाणा क्षेत्र का शासक तोमर राजा जयपाल था। महमूद गजनवी बिना युद्ध किए ही वापिस लोट गया।
- 1014 ई. में महमूद गजनवी ने थानेसर पर फिर आक्रमण किया। मारकण्डा नदी के तट पर राजा जयपाल व महमूद गजनवी की सेनाओं के बीच युद्ध हुआ, जिसमें महमूद गजनवी की विजय हुई और 1014 ई. में थानेसर पर कब्जा कर लिया
- गजनवी ने थानेसर में लूटपाट की तथा वहाँ के मन्दिर में स्थित कांसे से बनी चक्रस्वामी की मूर्ति को नष्ट कर दिया।
- महमूद गजनवी एक मूर्तियाँ तोड़ने वाला आक्रमणकारी था।
- महमूद गजनवी की थानेसर पर विजय के बाद भी तोमर शासक जयपाल इस क्षेत्र पर 1021 ई. तक शासन करता रहा।

मसूद एवं मादूद का आक्रमण -

- 1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु के बाद उसका पौत्र मसूद गद्दी पर बैठा।
- 1037 में मसूद ने हाँसी पर आक्रमण कर दिया और तोमर वंश के शासक कुमारपाल देव को पराजित करके हाँसी सहित आसपास के अनेक क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।
- 1043 में मसूद के पुत्र मादूद ने हरियाणा पर आक्रमण किया परन्तु इस बार वह शासक कुमारपाल देव द्वारा पराजित हुआ। हरियाणा 1043 ई. में महमूद गजनवी के शासन से मुक्त हुआ।
- 1051 ई. में कुमारपाल देव का उत्तराधिकारी अनंगपाल द्वितीय गद्दी पर बैठा। उसने 1081 ई. तक शासन किया।
- 1081 ई. में गजनी का शासक इब्राहिम था, जिसने हरियाणा क्षेत्र पर आक्रमण किया। उस समय हरियाणा का शासक अनंगपाल का उत्तराधिकारी तेजपाल था। जिसने आक्रमण किए बिना इब्राहिम की अधीनता स्वीकार कर ली।

चौहानों का हरियाणा में उदय -

तोमरों की कमजोर स्थिति को देखकर 1139 ई. में चौहान नरेश अरुण राज ने हरियाणा पर आक्रमण किया। अरुण राज ने तोमर राज्य को पूर्णतः नष्ट करके तोमर शासकों को अपने अधीन सामंत शासक बना लिया।

- इस प्रकार आंतरिक शासन तोमरों के हाथ में रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि तोमरों ने देखा कि चौहानों की स्थिति कमजोर है। वे स्वतंत्र होने की चेष्टा करने लगे।
- विग्रहराज और तोमरों के बीच इसलिए संघर्ष होते रहे हैं।
- विग्रहराज चौहान वंश का एक शक्तिशाली शासक था। उसने 'महाराजाधिराज परमेश्वर' की उपाधि धारण की थी।
- उसने तोमरों की शक्ति को पूरी तरह कुचल कर दिल्ली तथा हाँसी के दुर्गों पर अपना कब्जा कर लिया। इस प्रकार इस क्षेत्र के वास्तविक शासक चौहान हो गए, परन्तु विग्रहराज ने तोमरों के पास सामन्ती अधिकार रहने दिया।

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से विभिन्न परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें - (Proof Video Link)

RAS PRE. 2021 - https://shorturl.at/qBJ18 (74 प्रश्न, 150 में से)

RAS Pre 2023 - https://shorturl.at/tGHRT (96 प्रश्न, 150 में से)

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6URO

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk8S6W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD - 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vl

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
RAS Mains 2021	October 2021	52% प्रश्न आये
RAS Pre. 2023	01 अक्टूबर 2023	96 प्रश्न (150 मेंसे)
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)

whatsapp - https://wa.link/wdvcfu । web.- https://bit.ly/40yVhHP

SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (1st Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (1st शिफ्ट)	79 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO
FREE SAMPLE